हिन्दी

अलंकार

Hindi by Navneet Sir

खोल दे पंख मेरे
कहता है परिंदा,
अभी और उड़ान बाकी है,
जमीन नहीं है मंजिल मेरी,
अभी पूरा आसमान बाकी है।

अलंकार

अलंकार ट्रिक

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के चार भेद

- शब्दालंकार
- अर्थालंकार
- उभयालंकार
- पाश्चात्य अलंकार

शब्दालंकार

शब्दालंकार वें अलंकार है, जहाँ शब्द विशेष के ऊपर अलंकार की निर्भरता हो। शब्दालंकार में शब्द विशेष के प्रयोग के कारण ही कोई चमत्कार उत्पन्न होता है, उन शब्दों के स्थान पर समानार्थी दूसरे शब्दों को रख देने पर उसका सौन्दर्य समाप्त हो जाता है।

जैसे-

1. वह बाँसुरी की धुनि कानि परै,कुल-कानि हियो तजि भाजति है।
2. **भुजबल भूमि भूप बिन किन्ही**

शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं।

शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं

- अनुप्रास
- यमक
- श्लेष
- वक्रोक्ति
- पुनरुक्तिप्रकाश
- पुनरुक्तिवदाभास
- वीप्सा

अनुप्रास अलंकार

जिस रचना में व्यंजनों की बार-बार आवृत्ति के कारण चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

मुदित महीपति मन्दिर आये। सेवक सचिव सुमंत बुलाये।।

इस चौपाई में पूर्व में म की और उत्तर में स की तीन-तीन बार आवृत्ति हुई है, पर इनमें स्वरों का मेल नहीं है। कहीं-कहीं स्वर भी मिल जाते हैं;

जैसे -**सो सुख सुजस सुलभ मोहिं स्वामी।**

इसमें स की आवृत्ति पाँच बार हुई है, पर स्वरों का मेल (सुख, सुजस, सुलभ) केवल तीन बार हुआ है।

जैसे - 'सुरभित सुन्दर सुखद सुमन तुम पर खिलते हैं।'

इस काव्य-पंक्ति में पास-पास प्रयुक्त **'सुरभित'**, **'सुन्दर'**, **'सुखद'** और **'सुमन'** शब्दों में 'स' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

शब्दालंकार

वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास अलंकार कहते हैं

अनुप्रास अलंकार

- वृत्यानुप्रास
- छेकानुप्रास
- लाटानुप्रास
- श्रत्यानुप्रास
- अंत्यानुप्रास

वृत्यानुप्रास

अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति जहाँ एक व्यंजन की आवृत्ति एक या अनेक बार हो, वहाँ वृत्यनुप्रास होता है

एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति के द्वारा-

सबहिं सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा।।

एक स की अनेक बार आवृत्ति

बिधिनिषेधमय कलिमल हरनी। करम कथा रबिनन्दिनी बरनी।

यहाँ 'र' 'ब'

उस प्रमदा के अलकदाम से मादक सुरभि निकलती।

मद, दम, मद में अनेक व्यजनों की अनेक बार

छेकानुप्रास

अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः व क्रमतः आवृत्ति

छेक का अर्थ है वाक्-चातुर्य। अर्थात् वाक् से परिपूर्ण एक या एकाधिक वर्णों की आवृत्ति को **छेकानुप्रास** कहा जाता है।

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

यहाँ अनेक व्यंजनों-'पद' 'पदुम' में प, द और 'सुरुचि' 'सरस' में स, र की स्वरूपतः और क्रमतः एक बार आवृत्ति है

इस करुणा कलित हृदय में, क्यों विकल रागिनी बजती है।

उपरोक्त पंक्ति में 'क' वर्ण की आवृत्ति क्रम से एक बार है

लाटानुप्रास अलंकार:-

जब एक शब्द या वाक्य खंड की आवृति उसी अर्थ में हो वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है। यह यमक का ठीक उलटा है। इसमें मात्र शब्दों की आवृत्ति न होकर तात्पर्य मात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की आवृत्ति होती है

1. "रामभजन जो करत नहिं, भव- बंधन- भय ताहि।
रामभजन जो करत नहिं, भव-बंधन-भय ताहि।।"

1. पंकज तो पंकज, मृगांक भी है मृगांक री प्यारी।
मिली न तेरे मुख की उपमा देखी वसुधा सारी।।

श्रुत्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ कानो को मधुर लगने वाले वर्णों की आवृति होती है, मुख के उच्चारण स्थान से संबंधित विशिष्ट वर्णों के साम्य को श्रुत्यानुप्रास अलंकार होता है।

उदाहरण:-

1. " दिनांत था ,थे दीननाथ डुबते,
   सधेनु आते गृह ग्वाल बाल थे।"
2. तेहि निसि में सीता पहँ जाई।
   त्रिजटा कहि सब कथा सुनाई॥

अन्त्यानुप्रास अलंकार:-

जहाँ अंत में तुक मिलती हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है।जहाँ पद के अंत के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की साम्यमूलक आवृत्ति हो

उदाहरण:-

1.“लगा दी किसने आकर आग।
कहाँ था तू संशय के नाग?”

2. गुरु पद मृदु मंजुल अंजन।
नयन अमिय दृग दोष विभंजन॥

एक शब्द फिर फिर परे, जहाँ अनेकनबार।
अर्थ और ही और हो, सोये यमक अलंकार॥

यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द की आवृत्ति दो या दो से अधिक बार होती है, परन्तु उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं, वहाँ यमक अलंकार होता है।जहाँ शब्दों या वाक्यांशों की आवृति एक से अधिक बार होती है, लेकिन उनके अर्थ सर्वथा भिन्न होते हैं

उदाहरण

तीन बेर खाती, वो अब तीन बेर खाती हैं।

"कनक-कनक से सो गुनी,मादकता अधिकाय,
वा खाय बौराय जग, या पाय बोराय।।'

य

से

यमक अलंकार

श्लेष अलंकार

श्लेष का अर्थ है 'चिपका हुआ'। इस अलंकार में प्रयुक्त शब्दविशेष में कई अर्थ रहते हैं। जब पंक्ति में एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते है तब वहाँ **श्लेष अलंकार** होता है

रावन सिर सरोज बनचारी चलि रघुवीर सिलीमुख धारी।

(सिलीमुख' के अर्थ-बाण, भ्रमर)

सुबरन को ढूँढ़त फिरत कवि, व्यभिचारी, चोर।('सुबरन' के अर्थ–सुन्दर वर्ण, सुन्दर स्त्री और सोना।)

पी तुम्हारी मुख बास तरंग

आज बौरे भौरे सहकार।

(बौर-भौंर के प्रसंग में मस्त होना आम के प्रसंग में–मंजरी निकलना)

श

से

श्लेष अलंकार

वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ किसी बात पर वक्ता और श्रोता की किसी उक्ति के सम्बन्ध में,अर्थ कल्पना में भिन्नता का आभास हो, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।जिस शब्द से कहने वाले व्यक्ति के कथन का अभिप्रेत अर्थ ग्रहण न कर श्रोता अन्य ही कल्पित या चमत्कारपूर्ण अर्थ लगाये और उसका उत्तर दे, उसे वक्रोक्ति कहते हैं।

एक कबूतर देख हाथ में पूछा, कहाँ अपर है ?
उसने कहा, अपर कैसा ? वह तो उड़ गया सपर है।।

उ

से

उपमा अलंकार

अर्थालंकार-

काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमा अलंकार- उप + मा = उपमा

यहाँ उप का आशय है समीप और मा का आशय है मापना। अर्थात् समीप रखपर मिलान करना या समानता बतलाना। जब किसी वस्तु का वर्णन करते हुए उससे अधिक प्रसिद्ध किसी वस्तु से उसकी तुलना करते हैं, तब उपमा अलंकार होता है।

उपमा के चार अंग होते हैं-

1. **उसमेय-** जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है।
2. **उपमान-** जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता की जाती है।
3. **साधारण धर्म-** वह गुण/धर्म जिसकी तुलना की जाती है।
4. **वाचक शब्द-** वह शब्द जो रूप, रंग, गुण और धर्म की समानता दर्शाता है।

यथा- सा, सी, सम, समान आदि।

उदाहरण-

1. सिन्धु-सा विस्तृत और अथाह,
एक निर्वाचित का उत्साह।

2. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी।
प्रस्तुत उदाहरण में,
उपमेय- बच्ची, उपमान- फूल,
साधारण धर्म- कोमल, वाचक शब्द- सी

3. पीपर पात सरिस मन डोला।

रूपक अलंकार-

काव्य में जहाँ उपमेय पर उपमान का आरोप या उपमेय और उपमान का अभेद ही रूपक अलंकार है। इसमें वाचक शब्द का लोप होता है।

उदाहरण- 1. उदित उदयगिरि-मंच पर, रघुबर बाल पतंग।
बिकसे संत-सरोज सब, हरसे लोचन-भृंग।

उपर्युक्त उदाहरण में उपमेय और उपमान का आरोप-

1. उदयगिरि पर मंच का,
रघुबर पर बाल-पतंग का,
संतों पर-सरोज का,
लोचनों पर भृंग (भौरों) का।

र

से

रूपक अलंकार

उत्प्रेक्षा अलंकार-

उत्प्रेक्षा का अर्थ है- किसी वस्तु को सम्मानित रूप में देखना।

काव्य में जहाँ उपमेय में कल्पित उपमान की संभावना व्यक्त की जाती है वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

इसके वाचक शब्द- जनु, जानी, मनो, मानो, मनहु, ज्यों, जानो, मानहुँ, मनु आदि।

उदाहरण- 1. सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।
मनहुँ नील मणि सैल पर, आतप पर्यो प्रभात।

2. पुलक प्रकट करती है धरती, हरित तृणों की नोकों से।
मानों झूम रहें हैं तरु भी, मंद पवन के झोंके से।

अतिशयोक्ति अलंकार-

जहाँ लोकसीमा का अतिक्रमण करके किसी विषय वस्तु या विषय का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण-

1. पड़ी अचानक नदिया अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।

2. देख लो साकेत नगरी है यही
स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।

राह संघर्ष की जो चलता है; वो ही संसार को बदलता है। जिसने रातों से जंग जीती, सूर्य बनकर वहीं निकलता है।

अन्योक्ति अलंकार-

जहाँ प्रस्तुत के माध्यम से अप्रस्तुत का अर्थ ध्वनित हो, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। अर्थात् जहाँ किसी बात को सीधे या प्रत्यक्ष न कहकर अप्रत्यक्ष रूप से कहते हैं, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण-

1. माली आवत देखकर, कलियन करी पुकारि।
फूले-फूले चुन लिए, काल्हि हमारी बारि।

2. जिस दिन देखे वे कुसुम, गई सो बीति बहार।
अब अलि रही गुलाब में, अपत कटीली डार।

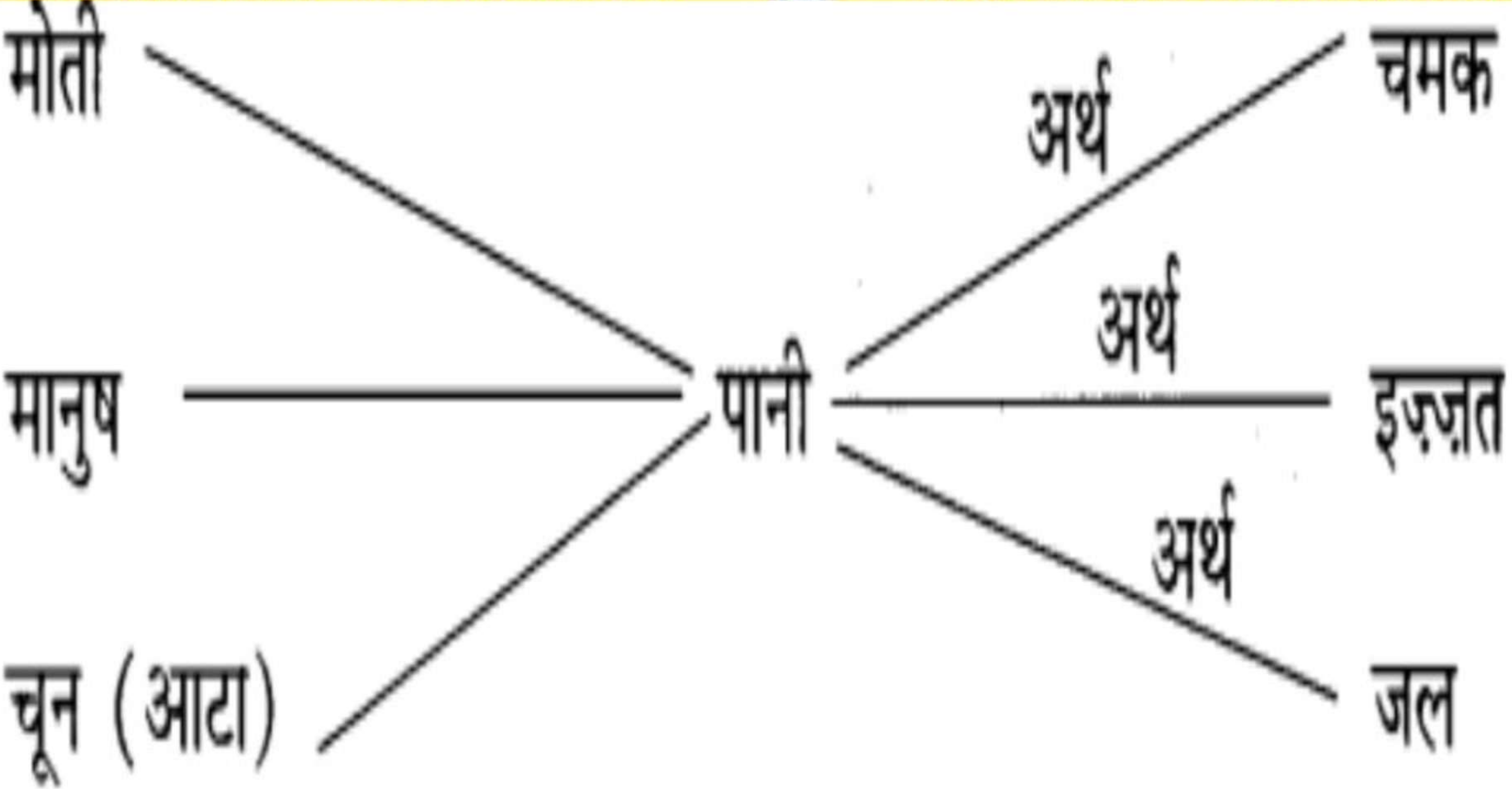
मोती
मानुष
चून (आटा)
पानी
अर्थ
चमक
अर्थ
इज़्ज़त
अर्थ
जल

अ

से

अतिशयोक्ति अलंकार

श्लेष वक्रोक्ति अलंकार क्या है

:- जहाँ पर श्लेष की वजह से वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का अलग अर्थ निकाला जाये वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे :- को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो।

चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों।।

श्लेष अलंकार क्या होता है :-

जहाँ पर कोई एक शब्द एक ही बार आये पर उसके अर्थ अलग अलग निकलें वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है।

जैसे :- रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरै मोती मानस चून।।

अर्थ – जिसमें रहीम जी ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है जिसमें पानी का पहला अर्थ आदमी या मनुष्य के संदर्भ में है जिसका मतलब विनम्रता से है क्योंकि मनुष्य में हमेशा विनम्रता होनी चाहिए। पानी का दूसरा अर्थ चमक या तेज से है जिसके बिना मोतियों का कोई मूल्य नहीं होता है। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे को गूथने या जोड़ने में दिखाया गया है क्योंकि पानी के बिना आटे का अस्तित्व नम्र नहीं हो सकता है और मोती का मूल्य उसकी चमक के बिना नहीं हो सकता है उसी तरह से मनुष्य को भी अपने व्यवहार को हमेशा पानी की ही भांति विनम्र रखना चाहिए जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है।

श्लेष अलंकार के भेद :

1.अभंग श्लेष अलंकार

2.सभंग श्लेष अलंकार

अभंग श्लेष अलंकार :- जिस अलंकार में शब्दों को बिना तोड़े ही एक से अधिक या अनेक अर्थ निकलते हों वहां पर अभंग श्लेष अलंकार होता है।

जैसे :- रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून।।

अभंग श्लेष:-

जब किसी पद में प्रयुक्त श्लिष्ट शब्द के टुकड़े किये बिना ही शब्दकोश या लोक-प्रसिद्धि अर्थ के अनुसार अलग-अलग अर्थ प्रयुक्त हो जाते हैं तो वहाँ अभंग श्लेष अलंकार माना जाता है।

उदाहरण –

1. ''नर की अरु नलनीर की, गति एकै करि जोय।
जेतो नीचो ह्वै चले, तेतो ऊँचो होय।।''

2. ''मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित दुति होय।।''

3. इन्द्रनील मणि महा चषक था, सोम रहित उलटा लटका।

सभंग श्लेष अलंकार :- जिस अलंकार में शब्दों को तोडना बहुत अधिक आवश्यक होता है क्योंकि शब्दों को तोड़े बिना उनका अर्थ न निकलता हो वहां पर सभंग श्लेष अलंकार होता है।

जैसे :- सखर सुकोमल मंजु, दोषरहित दूषण सहित।

सभंग श्लेष:-

जब किसी पद में किसी श्लिष्ट शब्द के टुकड़े करने पर ही एक से अधिक अर्थ प्रकट होते हैं तो वहाँ सभंग श्लेष अलंकार माना जाता है।

उदाहरण –

1. ''संतत सुरानीक हित जेही। बहुरि सक्र बिनवहु तेही।''
2. ''चिरजीवौ जोरी जुरै, क्यों न सनेह गम्भीर।
को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के बीर।।''
3. ''अजौं तर्यौना ही रह्यौ, श्रुति सेवत इक अंग।
नाक बास बेसरि लह्यौ, बसि मुकुतन के संग।।''

उत्प्रेक्षा अलंकार-

जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। उत्प्रेक्षा के लक्षण- मनहु, मानो, जनु, जानो, ज्यों,जान आदि। उदाहरण-

लता भवन ते प्रकट भे,तेहि अवसर दोउ भाइ।
मनु निकसे जुग विमल विधु, जलद पटल बिलगाइ।।

दादुर धुनि चहु दिशा सुहाई।
वेद पढ़हिं जनु बटु समुदाई।।
मेरे जान पौनों सीरी ठौर को पकरि कौनों ,
घरी एक बैठि कहूँ घामैं बितवत हैं ।
मानो तरु भी झूम रहे हैं, मंद पवन के झोकों से |

उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अथार्त जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। अगर किसी पंक्ति में मनु, जनु, मेरे जानते, मनहु, मानो, निश्चय, ईव आदि आते हैं वहां पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे :- सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल
बाहर सोहत मनु पिये, दावानल की ज्वाल॥

उत्प्रेक्षा अलंकार के भेद :-

1. वस्तुप्रेक्षा अलंकार
2. हेतुप्रेक्षा अलंकार
3. फलोत्प्रेक्षा अलंकार

वस्तुप्रेक्षा अलंकार

जहाँ पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना दिखाई जाए वहाँ पर वस्तुप्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे :- "सखि सोहत गोपाल के, उर गुंजन की माल।
बाहर लसत मनो पिये, दावानल की ज्वाल।।"

हेतुप्रेक्षा अलंकार

जहाँ अहेतु में हेतु की सम्भावना देखी जाती है। अथार्त वास्तविक कारण को छोडकर अन्य हेतु को मान लिया जाए वहाँ हेतुप्रेक्षा अलंकार होता है।

फलोत्प्रेक्षा अलंकार

इसमें वास्तविक फल के न होने पर भी उसी को फल मान लिया जाता है वहाँ पर फलोत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे :- खंजरीर नहीं लखि परत कुछ दिन साँची बात।
बाल द्रगन सम हीन को करन मनो तप जात।।

संदेह अलंकार

जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं। जब यह दुविधा बनती है , तब संदेह अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर किसी व्यक्ति या वस्तु को देखकर संशय बना रहे वहाँ संदेह अलंकार होता है। यह अलंकार उभयालंकार का भी एक अंग है।

जैसे :- यह काया है या शेष उसी की छाया,
क्षण भर उनकी कुछ नहीं समझ में आया।

संदेह अलंकार की मुख्य बातें :-

1.विषय का अनिश्चित ज्ञान।

2.यह अनिश्चित समानता पर निर्भर हो।

3.अनिश्चय का चमत्कारपूर्ण वर्णन हो।

जब उपमेय में उपमान का संशय हो तब संदेह अलंकार होता है। या जहाँ रूप, रंग या गुण की समानता के कारण किसी वस्तु को देखकर यह निश्चित न हो कि वही वस्तु हैऔर यह संदेह अंत तक बना रहता है, वहाँ सन्देह अलंकार होता है।

उदाहरण-

कहूँ मानवी यदि मैं तुमको तो ऐसा संकोच कहाँ?
कहूँ दानवी तो उसमें है यह लावण्य की लोच कहाँ?
वन देवी समझूँ तो वह तो होती है भोली-भाली।।

विरह है या वरदान है।

सारी बिच नारी है कि नारी बिच सारी है।

कि सारी ही की नारी है कि नारी ही की सारी है।

कहहिं सप्रेम एक-एक पाहीं।

राम-लखन सखि होहिं की नाहीं।।

अतिशयोक्ति अलंकार-

काव्य में जहाँ किसी बात को बढ़ा चढ़ा के कहा जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है। उदाहरण-

हनुमान की पूँछ में, लगन न पायी आग।
लंका सगरी जल गई, गए निशाचर भाग।।

आगे नदिया पड़ी अपार, घोडा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

देखि सुदामा की दीन दसा,

करुना करिकै करुणानिधि रोए।

पानी परात को हाथ छुयौ नहिं ,

नैनन के जल सों पग धोए।

जनु अशोक अंगार दीन्ह मुद्रिका डारि तब।

मनो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोकों से।

विरोधाभास अलंकार-

जहाँ बाहर से विरोध दिखाई दे किन्तु वास्तव में विरोध न हो।

जैसे-

ना खुदा ही मिला ना बिसाले सनम।
ना इधर के रहे ना उधर के रहे।।

जब से है आँख लगी तबसे न आँख लगी।

विरोधाभास

विरोध + आभास

विरोध

या अनुरागी चित्त की , गति समझे नहिं कोय।
ज्यों- ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों-त्यों उज्ज्वल होय॥

सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूरब बात ।
ज्यों खरचै त्यों- त्यों बढे , बिन खरचे घट जात ॥

शीतल ज्वाला जलती है, ईंधन होता दृग जल का। यह व्यर्थ साँस चल-चलकर,करती है काम अनिल का।.

भ्रांतिमान अलंकार

जहाँ प्रस्तुत को देखकर किसी विशेष साम्यता के कारण किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाता है, वहाँ भ्रांतिमान अलंकार होता है।

उदाहरण-

चंद के भरम होत मोड़ है कुमुदनी।

नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से,
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है, अन्य शुक कौन है।

चाहत चकोर सूर ओर , दृग छोर करि।
चकवा की छाती तजि धीर धसकति है।
बादल काले- काले केशों को देखा निराले।
नाचा करते हैं हरदम पालतू मोर मतवाले।।

विभावना अलंकार :-

जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाय , वहां विभावना अलंकार होता है।

जैसे-

बिनु पग चलै सुनै बिनु काना।
कर बिनु करम करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी ।
बिनु बानी बकता बड़ जोगी।।

स्पष्टीकरण – उपर्युक्त उदाहरण में कारण न होते हुए भी कार्य का होना बताया जा रहा है। बिना पैर के चलना , बिनाकान के सुनना, बिना हाथ के नाना कर्म करना , बिना मुख के सभी रसों का भोग करना और बिना वाणी के वक्ता होना कहा गया है। अतः यहाँ विभावना अलंकार है।

निंदक नियरे राखिए , आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन निरमल करे स्वभाव॥

अर्थालंकार के प्रकार-

उपमा अलंकार-

काव्य में जब दो भिन्न वस्तुओं में समान गुण धर्म के कारण तुलना या समानता की जाती है, तब वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उपमा के 4 अंग हैं।

i. उपमेय- जिसकी तुलना की जाय या उपमा दी जाय। जैसे- मुख चन्द्रमा के समान सुंदर है। इस उदाहरण में मुख उपमेय है।

ii. उपमान- जिससे तुलना की जाय या जिससे उपमा दी जाय। उपर्युक्त उदाहरण में चन्द्रमा उपमान है।

iii. साधारण धर्म- ऊपर दिए गए उदाहरण में 'सुंदर ' साधारण धर्म है जो उपमेय और उपमान दोनों में मौजूद है।

वाचक -समानता बताने वाले शब्द को वाचक शब्द कहते हैं। ऊपर दिए गए उदाहरण में वाचक शब्द 'समान' है। (सा , सरिस , सी , इव, समान, जैसे , जैसा, जैसी आदि वाचक शब्द हैं) उल्लेखनीय- जहाँ उपमा के चारो अंग उपस्थित होते हैं, वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है। जब उपमा के एक या एक से अधिक अंग लुप्त होते हैं, तब लुप्तोपमा अलंकार होता है।

उपमा अलंकार के अंग :-

1. उपमेय
2. उपमान
3. वाचक शब्द
4. साधारण धर्म

1. **उपमेय :-** उपमेय का अर्थ होता है – उपमा देने के योग्य। अगर जिस वस्तु की समानता किसी दूसरी वस्तु से की जाये वहाँ पर उपमेय होता है।

2.**उपमान :-** उपमेय की उपमा जिससे दी जाती है उसे उपमान कहते हैं। अथार्त उपमेय की जिस के साथ समानता बताई जाती है उसे उपमान कहते हैं।

3. वाचक शब्द :- जब उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है तब जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है उसे वाचक शब्द कहते हैं।

4. साधारण धर्म :- दो वस्तुओं के बीच समानता दिखाने के लिए जब किसी ऐसे गुण या धर्म की मदद ली जाती है जो दोनों में वर्तमान स्थिति में हो उसी गुण या धर्म को साधारण धर्म कहते हैं।

उपमा अलंकार के भेद :-

1.पूर्णोपमा अलंकार

2.लुप्तोपमा अलंकार

पूर्णोपमा अलंकार क्या होता है :- इसमें उपमा के सभी अंग होते हैं – उपमेय, उपमान, वाचक शब्द, साधारण धर्म आदि अंग होते हैं वहाँ पर पूर्णोपमा अलंकार होता है।

जैसे :- सागर-सा गंभीर ह्रदय हो,

गिरी-सा ऊँचा हो जिसका मन।

लुप्तोपमा अलंकार :- इसमें उपमा के चारों अगों में से यदि एक या दो का या फिर तीन का न होना पाया जाए वहाँ पर लुप्तोपमा अलंकार होता है।

जैसे :- कल्पना सी अतिशय कोमल। जैसा हम देख सकते हैं कि इसमें उपमेय नहीं है तो इसलिए यह लुप्तोपमा का उदहारण है।

उपमा के उदाहरण-

1. पीपर पात सरिस मन डोला।

2. राधा जैसी सदय-हृदया विश्व प्रेमानुरक्ता ।

3. माँ के उर पर शिशु -सा , समीप सोया धारा में एक द्वीप ।

4. सिन्धु सा विस्तृत है अथाह,
एक निर्वासित का उत्साह |

रूपक अलंकार-

जब उपमेय में उपमान का निषेध रहित आरोप करते हैं, तब रूपक अलंकार होता है। दूसरे शब्दों में जब उपमेय और उपमान में अभिन्नता या अभेद दिखाते हैं, तब रूपक अलंकार होता है।उदाहरण-

उदाहरण :

चरण-कमल बंदउँ हरिराई।

राम कृपा भव-निशा सिरानी

रूपक अलंकार की निम्न बातें :-

1.उपमेय को उपमान का रूप देना।

2.वाचक शब्द का लोप होना।

3.उपमेय का भी साथ में वर्णन होना।

बंदउँ गुरुपद पदुम- परागा।
सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।।

चरण सरोज पखारन लागा |
''उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग।
बिकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन-भृंग।।''
''बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डूबो रही तारा-घट उषा नागरी।।''

''नारि-कुमुदिनी अवध सर रघुवर विरह दिनेश।
अस्त भये प्रमुदित भई, निरखि राम राकेश।।
''

''रनित भृंग घंटावली, झरत दान मधुनीर।
मंद-मंद आवतु चल्यो, कुंजर कुंज समीर।।''

''छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोई बहुरंग कमल कुल सोहा।।
अरथ अनूप सुभाव सुभासा। सोई पराग मकरंद सुवासा।।''

''बढ़त-बढ़त सम्पत्ति सलिल मन सरोज बढ़ि जाय।
घटत-घटत फिरि ना घटै, तरु समूल कुम्हलाय।।''

''जितने कष्ट कंटकों में है, जिनका जीवन सुमन खिला।
गौरव ग्रंथ उन्हें उतना ही, यत्र तत्र सर्वत्र मिला।।''

रूपक अलंकार के भेद :-

1.सम रूपक अलंकार

2.अधिक रूपक अलंकार

3.न्यून रूपक अलंकार

सम रूपक अलंकार :- इसमें उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है वहाँ पर सम रूपक अलंकार होता है।

जैसे :- बीती विभावरी जागरी. अम्बर – पनघट में डुबा रही, तारघट उषा – नागरी।

2.अधिक रूपक अलंकार :- जहाँ पर उपमेय में उपमान की तुलना में कुछ न्यूनता का बोध होता है वहाँ पर अधिक रूपक अलंकार होता है।

न्यून रूपक अलंकार :- इसमें उपमान की तुलना में उपमेय को न्यून दिखाया जाता है वहाँ पर न्यून रूपक अलंकार होता है।

जैसे :- जनम सिन्धु विष बन्धु पुनि, दीन मलिन सकलंक
सिय मुख समता पावकिमि चन्द्र बापुरो रंक॥

मानवीकरण अलंकार

जब काव्य में प्रकृति को मानव के समान चेतन समझकर उसका वर्णन किया जाता है , तब मानवीकरण अलंकार होता है

जैसे –

1. है विखेर देती वसुंधरा मोती सबके सोने पर
रवि बटोर लेता उसे सदा सबेरा होने पर।

मानवीकरण अलंकार

जहाँ पर काव्य में जड़ में चेतन का आरोप होता है वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है अथार्त जहाँ जड़ प्रकृति पर मानवीय भावनाओं और क्रियांओं का आरोप हो वहाँ पर मानवीकरण अलंकार होता है। जब प्रकृति के द्वारा निर्मित चीजों में मानवीय भावनाओं के होने का वर्णन किया जाए वहां पर मानवीकरण अलंकार होता है।

उषा सुनहले तीर बरसाती
जय लक्ष्मी- सी उदित हुई ।
3. केशर -के केश – कली से छूटे ।
4. दिवस अवसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही
वह संध्या-सुन्दरी सी परी धीरे-धीरे।

Q.1 'सूर–सूर तुलसी ससी उडगन केशवदास अब के कवि खद्योत सम जहँ–तहँ करत प्रकाश।।

इन पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग हुआ है?

(A) अनुप्रास

(B) यमक

(C) उत्प्रेक्षा

(D) विरोधाभास

Q.2 ‘कनक–कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय’ में कौन–सा अलंकार है?

(A) अनुप्रास

(B) रूपक

(C) यमक

(D) श्लेष

Q.3 जहाँ शब्दों, शब्दांश या वाक्यांशों की आवृत्ति हो, किंतु उनके अर्थ भिन्न हों, वहां निम्न अलंकार होता है–

(A) श्लेष

(B) वक्रोति

(C) यमक

(D) रूपक

Q.4 'तरणि के ही संग तरल तरंग में, तरणि डूबी थी हमारी ताल में।' इसमें प्रयुक्त अलंकार है–

(A) श्लेष
(B) यमक
(C) रूपक
(D) उत्प्रेक्षा

Q.5 'खग–कुल कुल–कुल सा बोल रहा' रेखांकित शब्दों का अलंकार है–

(A) यमक

(B) श्लेष

(C) उपमा

(D) रूपक

Q.6 जिस काव्य–पंक्ति में प्रयुक्त किसी एक ही शब्द के एक से अधिक अर्थ हों, उस पंक्ति में अलंकार होता है–

(A) रूपक

(B) अनुप्रास

(C) यमक

(D) श्लेष

Q.7 श्लेष अलंकार होता है–

(A) शब्दालंकार

(B) अर्थातलंकार

(C) उभयलंकार

(D) उपर्युक्त सबसे अलग

A

शब्द

Q.8 निम्नांकित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइये–

रनित भृंग घंटावली झरित दान मधुनीर।
मंद–मंद आवत चल्यो कुंजरू कुंज समीर।।

(A) उत्प्रेक्षा

(B) रूपक

(C) यमक

(D) श्लेष

Thank You!